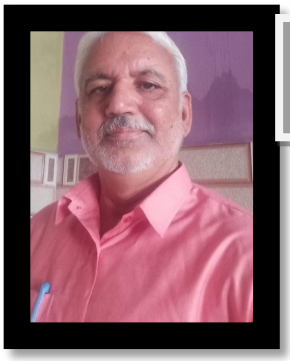

राजपाल सिंह गुलिया

झज्जर, हरियाणा

अपने पैर कुल्हाड़ी मार

अपने पैर कुल्हाड़ी मार,

हाथ रहे खुद को धिक्कार.

दुश्मन को कम करके आँका,

नहीं विरोधी खेमे झाँका.

विश्वासों ने ऐसा चाँका.

गए जीत कर हम तो हार.

पलट दिया था पल ने पाँसा,

लगी सताने कल की साँसा,

थमा दिया ये किसने काँसा.

समझ लिया शायद लाचार.

जीवन गुजरा मूढ़ सरीखा,

रहा जायका इसका तीखा,

नहीं सबक भूलों से सीखा.

आँख मींच करते अँधकार.

शब्द चुभे कुछ सच्चे

बच्चों की कहासुनी,

. भारी पड़ी बड़ों पर .

खनक गए घट कच्चे,

शब्द चुभे कुछ सच्चे .

उड़ शराफत के गए,

तभी वहाँ परखच्चे .

जल भी रुका हुआ था,

चिकने चंद घड़ों पर .

लिए छुरी औ' चाकू,

उतरे उग्र लड़ाकू,

देव सरीखे जन भी,

पल में हुए हलाकू .

वार किया नफरत ने,

रेशेदार जड़ों पर .

हुआ बालमन आहत,

उल्फ़त हुई हताहत .

बैरभाव का डेरा,

लील गया था चाहत .

हुई अतल वह खाई,

था यूँ असर धड़ों पर .